शालिभद्रसूरिकृत

रतेश्वर - बाहुबिल रास

तथा

बुद्धि रास

[वि. सं. १२४१ मां रचाएली गुजाराती भाषानी प्राचीनतम पद्यकृति]



आन्ध्रगिरि (अन्धेरी) मां भरावा गुजराती साहित्य परिषत् संमेलन

१४ मा अधिवेशन प्रसंगे प्रकाशित

संपादक श्री जिन विजय मुनि

[जारतीय विद्या, वर्ष २, अङ्क १, मांथी उद्धृत]

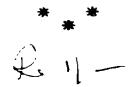
शालिभद्रस्रिकत भरतेश्वर – बाहुबिल रास नथा बुद्धिरास

[गुजराती भाषानी प्राचीनतम पद्यरचना]

अन्ध्रगिरि (अन्धेरी) मां भराता गुजराती साहित्य परिषत् संमेलन

१४ मा अधिवेशन प्रसंगे प्रकाशित

संपादक *श्री जिन विजय मुबि*



विजया दशमी, सं. १९९७]

गुजरातना
पुरातन साहित्यना समुद्धार
अने
अनिनव वाङ्मयनः समुत्कर्षनी
साधना मांट
गुजराती साहित्य संसद्
स्थापित करी
गुजराती जनताना
भावुक मानसमां
सांस्कारिक 'अस्मिता'

भारतीय संस्कृतिना

उच्चतम अध्ययन - अध्यापन
अने

सवागीण शिक्षणप्रसार
निर्मित्त

भारतीय विद्या भवन
तथा तदन्तर्गत
गुजरावना अनन्य ज्ञानज्येतिर्धर
श्रीमट् हेमचन्द्राचार्यनुं
सार्वजनीन स्मृतिमन्दिर
स्थापित करनार

सह्दय सुहद्वर श्रीमत् कन्हैयालाल माणेकलाल मुंद्री

: 14

: :

ना

कर्तव्यनिरत करकमलमां

हैमयुगीन गुजराती भाषानो

आ

प्राचीनतम पद्य प्रवन्ध नूतन प्रतिष्ठित हेमचन्द्रस्मृतिमन्दिरमां सर्वोच स्थापन करवा माटे

माद्र समर्पित

*

जिन विजय

किंचित् प्रास्ताविक

भारतीय विद्या भवनना सुयोग्य सूत्र-संचालन नीचे, एना पोताना ज अभिनव रचाएला भव्य भवनना प्रशस्त प्रांगणमां, शरत्पूर्णिमा जेवा शुभ्र-तर अने शुभक्तर पर्वदिवसे भराता, गुजराती साहित्य परिषद् संमेलनना, १४मा अधिवेशनरूप आनन्दोत्सव प्रसंगे, गूर्जरगिराना गुण-गौरवमां गर्व अनु-भवनारा सुविज्ञ सज्जनोना करकमलमां, गुजराती भाषानी अद्याविध अप्रकाशित अने अपरिचित एवी एक सौथी प्राचीन पद्यकृति सादर समर्पित करं छुं।

आ कृतिनुं नाम भरतेश्वर बाहुबिल रास छे। एना कर्ता जैन श्वेतांबर संप्रदायना राजगच्छ नामना आम्नायमां थएला शालिभद्र सूरि छे। आनो रचना समय विक्रम संवत् १२४१, ना फाल्गुन मासनी पंचमी तिथि छे।

आपणने गुजराती भाषाना पुरातन साहित्यना विशाल संग्रहनी वास्तविक अने विश्वस्त ओळखाण तथा भाळ आपवानुं प्रयम मान सद्गत विद्वान् चीमनलाल डाह्याभाई दलाल एम. ए. ने प्राप्त थाय छे। इ.स. १९१४नी अन्तमां, वडोद राना साहित्यविलासी सद्गत श्रीसयाजीरात्र महाराजनी आज्ञाथी, तेमने पाटणना जैन भंडारोनुं व्यवस्थितरीते निरीक्षण करवानो परम सुयोग प्राप्त थयो; अने तेमां, पाटणना मंडारोना अग्र उद्धारक प्र्यपाद प्रवर्तक मुनिवर श्रीकांतिविजयजी महाराज तथा तेमना अनन्य सहायक अने शास्त्रसुरक्षक स्वर्गस्थ शिष्यवर श्रीमुनि चतुरविजयजी महाराजनी विशिष्ट सहानुभूति भरेली इष्ट सहायताथी, तेमनुं ए निरीक्षणकार्य बहु ज सुंदररीते सफळ थयुं। तेमणे ए भंडारोमां छुपाएली विशाळ साहित्य संपत्तिनी सारा प्रमाणमां व्यवस्थित नोंध करी; अने ते उपरथी, सन् १९१५मां भराएली पांचमी गुजराती साहित्य परिषद् वास्ते एक विस्तृत निवंध तैयार कर्यों, जेमां 'पाटणना भंडारों अने खास करीने तेमां रहेलुं अपभंश तथा प्राचीन गुजराती साहित्य' ए विषय उपर गूर्जर साक्षरोने बहु ज विगतपूर्ण अने अभिनव प्रकाश आप्यो।

ए पहेलां, आपणी जूनी पेढीना बुजर्ग विद्वानो, गुजराती भाषाना आदि कि तरीके नरसी महेताने ओळखता अने 'मुग्धावबोध औक्तिक'मां मळी आवतां गुजराती वाक्योने गुजराती भाषाना आदि गद्य तरीके उल्लेखता।

घणुं करीने, ख॰ मनः सुख कीरतचंद महेता अने मनः सुखळाळ खजी भाई महेताए, जैन साहित्यना कांईक सिवशेष अवलोकनयी, पुराकालीन जैन (1)

विद्वानोए पोषेली गुजराती भारतीना भंडोळनो केटलोक नवीन परिचय, गुजराती साहित्य परिषद् आगळ निबंधरूपे उपस्थित कर्यो हतो अने नरसिंह महेता करतां पण बहु पहेलां अनेक जैन विद्वानो थई गया जेमणे गुजराती भाषामां घणी रचनाओं करी छे - एवं बताववा प्रयत कर्यो हतो । पण ए प्रयतमां कांईक तो सांप्रदायिक अनुराग विशेष देखातो हतो, अने बीज़ं तेमां मौलिक साहित्यना अवलोकननो अभाव जणातो हतो, तेथी विद्वानोमां ए विशेष आदरणीय न बन्यो।

ख ० श्रीमन:सुखलाल कीरतचंद महेताना ए विषेना उपयोगी सूचनवाळा निबंधना अवलोकनथी, मने पण ए विषयमां कांईक रस पेदा थयो, अने तेथी उक्त पूज्य मुनिवरोना वात्सल्यपूर्ण अने विद्यावर्द्धक अन्तेवास तेम ज प्रोत्साहनथी, पाटण अने वडोदरा आदिना भिन्न भिन्न भंडारोमां रक्षाएली अने छुपाएली विशाळ प्रंथराशिनो यथेष्ट परिचय मेळववानो इष्टतम सुयोग प्राप्त थतां, में पण प्राचीन गुजराती साहित्यनां अन्वेषण, अवलोकन अने संपादन आदि करवामां यथाबुद्धि प्रयत करवा मांड्यो ।

सौथी प्रथम, ई. स. १९१२-१३ मां, में प्राचीन भाषा साहित्य अवलोकवा अने संग्रहवा मांड्युं । पाटणना एक मंडारमां कागळनी एक प्राचीनतम हस्तलिखित प्रति मारा जोवामां आवी जे संवत् १३५७-५८मां लखेली हती अने जेमां प्रतिक्रमण सूत्र आदि अनेक प्रकीर्ण कृतिओनो संप्रह हतो. तेमां संस्कृत - प्राकृत - अपभंश आदिमां रचाएली नानी मोटी अनेक कृतिओ उपरांत, सर्वतीर्थ नमस्कार अने नमस्कार च्याख्यान आदि गुजराती गद्य लेखो, तथा विनयचंद्र स्रिकृत नेमिनाथ चतुष्पदिका आदि पद्य कृतिओ पण लखंली मारा जोवामां आवी। एमांनी नेमिनाथ चतुष्पदिका के जे एक तो शुद्ध एवी प्राचीन गुजरातीमां रचाएली हती, अने बीजुं तेमांनुं वर्णन बे सखीओना बारमासना संवादरूपनुं हतुं, तेथी भाषा अने कविता – बंने दृष्टिए एनी रचना मने उपयोगी लागी अने तेथी ते वखते प्रसिद्ध थता, जैनम्रेतांबर कॉन्फरन्स हेरल्डना सने १९१३ना 'पर्युषणा' अंकमां में तेने प्रसिद्ध कराबी। माणिक्यचन्द्र सूरि कृत गद्य पृथ्वीचंद्र चरितनी मूळ प्रति पण ए ज समये मारा अवलोकवामां आवी । गुजराती गद्यना एक उत्तम संदर्भ अने अभ्यसनीय प्रबंध तरीके मने तेनी विशिष्टता जणाई अने तेथी तेने प्रसिद्ध करवानी दृष्टिए तेनी अविकल नकल में मारा हाथे करी लीघी। आ रीते गुजराती

भाषाना अभ्यासनी सामग्रीनो सौथी प्राथमिक परिचय मने ते समये थयो, अने त्यारथी में तेनो उत्साह पूर्वक संग्रह आदि करवानो प्रारंभ कर्यो ।

बे त्रण वर्ष पाटणना मंडारोनुं अवलोकन कर्या पछी, उक्त पूज्य मुनिवरोना वात्सल्यपूर्ण सहवासमां ज परिश्रमण करतां, मारुं वडोदरा आववुं थयुं। त्यां भाई श्री चिमनलाल दलालना विशिष्ट समागम अने सौहार्दपूर्ण सहकारथी में मारा श्राचीन साहित्यना संशोधन अने संपादन कार्यनो व्यवस्थित उपक्रम आरंभ्यो।

भाई दलाले पण ए ज समयमां गायकवाडस ओरिएन्टल सीरीझना संपादन अने प्रकाशनमं काम हाथमां लीधं। ए सीरीझना प्रारंभ समये ज काच्यमीमांसा, हमीरमदमर्दन, वसंतविलास, मोहराजपराजय, कुमार-पाल प्रतिबोध, उद्यसुंद्री कथा आदि अनेकविध संस्कृत - प्राकृत प्रयो साथे गुजराती भाषाना प्राचीन साहित्यना संप्रहरूपे पण एक प्रंथ तैयार करवानो विचार थयो । ए विचार अने कार्यमां अमे वंने सहयोगी -- सहसंपादक हता । एना फळरूपे ए प्रंथमाळामां प्रसिद्ध थएल ते **प्राचीन गूर्जरकाव्यसंग्र**ह छे। ए संप्रहमां प्रकट थएल सामग्रीमांथी केटलीक मारी मेळवेली हती अने केटलीक भाई दलालनी हती । ए संप्रहमां प्रथम तो मात्र पद्यात्मक कृतिओ ज संप्रहवानी योजना हती, अने तेथी प्रथम पृष्ठ उपरनुं मुख्य नाम पण ए ज वस्तुसूचक राखवामां आब्युं। पण पाछळथी एमां अमुक समय पर्यतनो गद्य संग्रह पण आपवानो विचार स्फर्यो अने ते साथे गद्यमय समग्र प्रथ्वीचंद्र चरित पण दाखल करवानो निर्णय थयो । अने ए रीते, पाछळथी गद्य पद्य – उभयना संप्रह तरीके एनी संक-लना करवामां आवी। ए संग्रह छपातो हतो ते दरम्यान ज – बीजे वर्षे मारुं मुंबई अने ते पछी पूना तरफ प्रयाण थयुं । १९१८ना चोमासाना भयंकर इन्फ्लुऐंजामां, वडोदरामां भाई चिमनलाल अने पूनामां हुं — बन्ने सारीरीते सपडाया । तेमां भाई चिमनलाल तो ईश्वराज्ञाए, आ लोकथी निर्वेद यई परलोक तरफ चालता थया, अने हुं भ्रमिष्ठ चित्त बनी महिनाओ सुघी निश्चेष्ट यई रह्यो । खैर. भाई दलालनी इच्छा ए प्राचीन गूर्जरकान्यसंप्रहने बहु ज विस्तृत नोटस् आदि साथे तैयार करवानी हती, अने ए माटे घणी घणी नोंधो अमे तैयार पण करी हती। परंतु तेमना ए अकाल अवसानने लीघे ए कार्य अपूर्ण रह्यं अने गुजराती भाषा अने साहित्यना अभ्यासमां, ए नोंधोथी जे विशिष्ट सामग्री मळवानी आशा हती ते अफळ बनी ।

आम अपूर्ण छतांय ए 'प्राचीनमूर्जरकाव्यसंग्रह'ना प्रकाशनथी, आपणी भाषाना तत्कालीन प्राचीन खरूपनां अध्ययन अने अन्वेषणमां घणी कीमती मदत मळी छे; अने एना अवलोकनथी, आपणी भाषानी विशिष्ट पुरातनता, समुन्नतता अने विकखरता विषयक जूनी पेढीमां जे अति अल्पन्नता छनाएली हती ते दूर थई छे।

उक्त प्राचीन गूर्जरकाव्यसंप्रहमां मुख्यपणे वि० सं० १४०० सुधीमां रचाएली कृतिओनो संचय करवामां आवे हो हो। एमां सौथी जूनी कृति तरीके जे प्रकट करवामां आवी हे ते महेन्द्रसूरिशिष्य धर्म नामना विद्वाने बनावेल जंब्सामिरास हे। सं० १२६६मां ते रासनी रचना पूर्ण थई हे, एम तेनी होली कडीमां कहेलुं हो।

ते वखतना अवलोकन दरम्यान पाटणना भंडारमां शुद्ध गुजराती भाषानी ज्नामां ज्नी जे एक खतंत्र रचना जोवामां आवी ते ए जंबूखामिरासरूप हती अने तेथी भाई श्री दलाले पोताना उक्त साहित्यपरिषद्वाळा निबंधमां ते रासनी नोंध आपतां लख्युं हतुं के 'गूजराती भाषामां अत्यार सुधी मळी आवेला रासोमां आ सौथी जूनो छे'।

आजे हुं जे रास गूर्जर गिरानी गुरुताना उपासकोना हाथमां उपस्थित करुं छुं ते उक्त जंबूस्वामिरास करतां २५ वर्ष पूर्वे बनेलो छे। एनी रचना, जेम प्रारंभमां ज जणाव्युं छे तेम, वि० संवत् १२४१मां थएली छे। ठीक ते ज वर्षमां — जे वर्षमां सोमप्रभाचार्ये कुमारपालप्रतिबोध नामक प्राकृत महाग्रंथनी (जेमां काईक संस्कृत अने कांईक अपभंशना पण प्रकरणो छे) पाटणमां पूर्णाहुति करी हती। प्रस्तुत रासना कर्ता शालिभद्र सूरि पोताना स्थाननो कशो निर्देश नथी करता। पण घणा भागे ते पाटण ज होय एम लागे छे।

गुजरातना अनन्य ज्ञानसूर्य आचार्य हेमचंद्रने खर्गवास थए ते वखते मात्र १०-११ वर्ष ज व्यतीत थयां हतां। तेथी आपणे आ रासने हेमयुगनी ज एक कृति तरीके खीकारिए तो ते असंगत नथी। अने आ रीते प्रस्तुत रासरूपे आपणने हैमयुगनी चाछ् गुजराती भाषानो एक खतंत्र अने सुबद्ध प्रबंध मळी आवे छे। एथी कोई अन्य प्राचीनतर कृति उपलब्ध थतां सुधीमां आपणे एने गुजराती भाषाना इतिहासमां सर्व प्रथम स्थान आपवुं जोईए।

आ रासनी मने मात्र एक ज प्राचीन प्रति उपलब्ध थई छे जे वडोदरामां अवस्थित प्रवर्तक श्री कांतिविजयजी शास्त्र - संप्रहनी छे। प्रति कागळनी छे अने तेना कुछ ६ पानां छे। दरेक पानानी हंबाई आशरे ११६ ईंच अने चोडाई ४६ ईंच जेटली छे। प्रति उपर लख्या साल नथी, पण अनुमाने ४००थी ५०० वर्ष जेटली जूनी होय तेम जणाय छे।

जेम घणा भागे बधा ज जुना भाषा-लेखकोना विषयमां अनुभवाय छे, तेम आनी प्रतिनो लखनार पण जोडणीनी वाबतमां एकरूप नथी। खास करीने इकार उकारना इस्व - दीर्घनो कोई चोकस नियम आपणी भाषाना जना लेखको साचवता नथी । जेओ संस्कृत प्राकृतना महाधुरंधर विद्वानो हता अने जेमणे हजारो श्लोकोवाळा मोटा मोटा प्रंथो – काव्यो – शास्त्रो लख्या छे, तेओ पण ज्यारे पोतानी मातृभाषामां कांई रचना करे छे के छखे छे तो तेमां भाषानी विश्रद्धता के जोडणीनी एकरूपतानी कशी पण चोकसाई देखाती नथी। अने तेनं कारण ए छे के देश अने काळना भेदने लईने लोकभाषा हमेशां अनव-स्थित अने अनेकरूपी बनती रहेवाथी, ते समयमां तेनी विशिष्ट व्याकरणबद्धता शक्य न हती अने तेथी देशभाषामां लखनारा विद्वानो के कविओ शब्दोना रूपो के वर्णसंयोजनाना नियमो माटे कोई खास काळजी राखता नहि । आ वस्तु प्रस्तुत रासमां पण जणाई आवे छे । लखनारे 'इ' कार के 'उ' कारना हस्व-दीर्घनो कोई खास भेद राख्यो होय तेम देखातं नथी । एकना एक ज शब्दमां ए खरोने ते कोई ठेकाणे इस्वरूपे लखे छे तो कोई ठेकाणे दीर्घरूपे। तेम ज ज्यां इस्वनी अपेक्षा होय छे त्यां दीर्घ करी दे छे अने ज्यां दीर्घनी आवश्यकता होय छे त्यां हस्व पण छखी काढे छे । केटलांक ठेकाणे तो 'इ' अने 'उ' नी बच्चे मेद पण जाणे न गणतो होय तेम एकना बदले बीजो अक्षर अर्थात् इ के उ ना बदले उ के इ सुधां लखी नांखे छे। ए सिवाय शब्दोनी वर्ण-संयोजना (अक्षर-जोडणी)नी बाबतमां पण आपणा जूना लेखको एकरूपता नथी जाळवता अने अन्यवस्थितरीते छखाण करता रहे छे। एकला 'हवे' ए शन्दने 'हिवं' 'हिवु' 'हिवउ' 'हिवि' 'हिवइ' 'हिविइ' 'हिविं' 'हव' इस्यादि अनेक रूपे छखता होय के। वर्णसंयोजनानी आवी अनवस्थाने लीघे कोई पण जूना देशभाषा - लेखकनी रचनामां आपणे तेनी पोतानी चोक्स भाषाशैली के लोकोनी उचारण पद्धतिनो निश्चित परिचय नथी मेळवी शकता। अने जो कोई एवी जूनी कृति परिमाणमां

वधारे लोकप्रिय बनी होय अने तेनो जो पठन — पाठनमां वधारे प्रचार थयो होय तो, तेनी भाषा - रचनामां जुदा जुदा जमानाना अनेक जातनां रूपो अने पाठमेदो उमेराई, ते वधारे अनवस्थित रूप धारण करे छे; अने ते साथे कोई भाषातत्त्वानभिज्ञ संशोधक साक्षरना हाथे जो तेना जीर्ण देहनुं कायाकल्प थई जाय तो ते तद्दन नूतन रूप पण प्राप्त करी ले छे।

आवी जूनी कृतिओनुं मूळ खरूप मेळववा माटे अधिक संख्यामां अने जेम बने तेम वधारे जूनी छखेली प्रतिओ मेळववी जोइए अने तेमना सूक्ष्म अवलो-कन अने पृथकरणना आधारे पाठ-विचारणा थवी जोइए। आ पद्धतिए कार्य करवाथी ज आवी प्राचीन कृतिओनो आदर्शभूत पाठोद्धार थई शके अने कर्तानी शुद्ध भाषानो परिचय मळी शके।

पण जो एवी कृतिनी कोई अन्य प्रति न ज मळी राकती होय तो पछी तेने तो तेना यथालिखित रूपमां ज प्रसिद्ध करवी जोइए अने तेमां जे कांई संशोधन आदि करवा जेवुं जणातुं होय ते तेनी नीचेनी पादपंक्तिमां, के परिशिष्टरूपे पृथक् — टिप्पण विगेरेना रूपमां, बताववुं जोइए । केटलाक विद्वानो आवी जूनी कृतिओमां जे इच्छानुसार पाठसंशोधनो करवानी अने मूळ लेखमां परिवर्तनो करवानी पद्धतिनुं अवलंबन करे छे, ते सर्वथा अशास्त्रीय अने भाषास्रम उत्पन्न करनारी होई परित्यजयनीय छे।

प्रस्तुत रासनी मने मात्र उपर जणावेली एक ज प्रति मळी आवी छे। पाटण विगेरेना बीजा बीजा भंडारोमां, घणां वर्षोधी आनी तपास करी रह्यो छं, पण ते क्यां-यथी उपलब्ध थई राकी नथी। एनी एक बीजी प्रति, आगरामां अवस्थित श्रीविजय-धर्मलक्ष्मी ज्ञानमंदिरमां होवानी नोंध, साक्षर श्रीमोहनलाल दलीचंद देशाईना, जैन गूर्जर कविओ नामना महान् ग्रंथना भाग १ पृ. १ उपर, मळे छे। पण, विद्याविहारी मुनिराज श्रीविद्याविजयजी महाराज द्वारा, आगरामां ए प्रतिनी तपास करतां जाणवा मळ्युं के ते प्रति त्यांथी गुम थई गई छे – विगेरे ।

आम मूळनुं बीजुं कोई प्रत्यंतर न मळवाथी, आ रास जे रूपे ए एकमात्र जूनी प्रतिमां लखेलो मळी आब्यो छे तेवो ज अहिं मुद्दित कर्यो छे।

प्रति सारी पेठे ज्नी अने प्रमाणमां शुद्धतापूर्वेक छखेली होवाथी, रचनामां उपर सूचवी छे तेवी 'इ – उ' संबंघेनी अनवस्थता अने कांईक जोडणीनी शिथिलता सिवाय, बीजी कोई खास अपभ्रष्टता यई नथी; अने भाषा लगभग असलना जेवा ज रूपमां जळवाई रही छे ।

प्रस्तुत रासनी भाषा आदिना खरूपना विषयमां हुं अहं विशेष चर्चा करवा नयी इच्छतो। एनी भाषा अने शैलीनुं खरूप, ते समयनी अर्थात् ते सैकानी अने तेनी आसपासनी बीजी उपलब्ध कृतिओ — जेवी के, उक्त जंब्सामिरास, तथा विजयसेनसूरि कृत रेवंतगिरिरास, अज्ञातनाम कृत आब्गिरिरास आदि — ना जेवी ज छे। छन्दोरचना पण लगभग ए अन्य कृतिओमां मळी आवे छे तेवी ज छे। दोहा, वस्तु अने चउपइ जेवा ते समयना सौथी प्रसिद्ध अने प्रचलित मात्रामेळ छन्दो उपरांत अमुक लढणमां गवाय एवा ढाळवाळा रागना छन्दोनो पण आमां उपयोग थएलो छे, जे छन्दोने कर्ता पोते रासा छन्दो कहे छे। दरेक उवणि पछी जे छन्दोवाळी पंक्तिओ — कडीओ आवे छे ते जुदा जुदा रागमां गवाय एवा आ रा सा छ न्दो छे।

रासगत कथावस्तु जैन साहित्यमां बहु ज सुप्रसिद्ध छे । युगादि पुरुष भगवान् ऋषभदेवना पुत्र नामे भरत अने बाहुबिल — ए बंने वच्चे राजसत्ताना स्वीकारमाटे परस्पर जे विग्रह थयो अने तेनो जे रीते अंत आब्यो तेनुं एमां वर्णन करवामां आब्युं छे । किवनी शैली ओजस् भरी छे अने शब्दोनी झमक पण सारी छे । वीर रसनो वेग वधारे विकसित लागे छे। कथाना प्रसंगो बहु ज संक्षेपयी वर्णववामां आव्या छे तेथी किवने पोतानो काव्यरस खिलववानो अहिं अवकाश ज नथी, एटले एनी काव्यशक्तिनो विशेष विचार करवो अप्राप्त छे। छतां

परह आस किणि कारणि कीजइ, साहस सइवर सिद्धि वरीजइ। हीउं अनइ हाथ हत्थीयार, एह जि वीर तणउ परिवार ॥ १०६॥ आवी जे केटलीक हृदयंगम उक्तिओ मळी आवे छे ते उपरथी एनी रसमय वाणीनी कल्पना यींकिचित् थई शके तेम छे।

बु द्धि रा स

आ रासनी पछी ६३ कडीनो एक टुंको प्रबंध नामे बुद्धि रा स आपवामां आब्यो छे, जेना कर्ता पण शालिभद्र सूरि ज छे। जो के कर्ताए एमां, जेम 'भरतेश्वर बाहुबलि रास'मां आप्यां छे तेम, पोताना गच्छ अने गुरु आदिनां नाम नथी आप्यां, अने तेथी सर्वथा निश्चितरूपे तो एम न ज कही शकाय के आ रास पण ए ज शालिभद्र सूरिनी कृति छे। कारण के शालिभद्र सूरि नामना एक — वे बीजा पण प्रंथकारो थई गया छे अने तेमणे पण गुजराती

भाषामां रासा विगेरेनी रचना करेली छे। छतां प्रस्तुत 'बुद्धिरास'नी भाषा अने शैलीनो सूक्ष्म अभ्यास करतां, आ कृति पण ए ज कर्तानी होय एम विशेष संभवित लागे हे ।

ए बुद्धिरासमां प्रथम तो सर्वसाधारण – सामान्य जनताने जीवनमां आचरवा अने विचारवा जेवां केटलांक उत्तम शिक्षासूत्रो – बोध वचनो गुंध्यां छे; अने क्षेवटे थोडांक शिक्षावचनो खास श्रावकवर्गने आचरवा अने मनन करवा माटे कह्यां छे। आ बधां बोधवचनो बहु ज टूंका अने तद्दन सरळ छे। दरेक माणसने कंठे करवा जेवां छे।

भंडारोना अन्वेषण उपरथी जणाय छे के आ बुद्धिरास, गत ६ – ७ सैकाओमां खूब ज जनिपय थई पड्यो हतो। सेंकडो नर-नारीओ एने कंठस्थ करता अने एनं निरंतर वाचन - मनन करता । ए कारणथी जूना भंडारोमां ज्यां त्यां एनी अनेकानेक प्रतिओ मळी आवे छे। अने ए रीते ए रासनी प्रचार-अधिकताने रुईने, एनी जुदी जुदी प्रतिओमां केटलाक खास पाठभेदो अने भाषानां बहुविध रूपान्तरो थयेलां पण मळी आवे छे। आ साथे जे वाचना मुद्रित करवामां आवी छे ते मने मळेली जूनामां जूनी प्रतिनी छे । आ कृतिनी सैकावार लखाएली एवी घणीय प्रतिओ मळी आवे छे अने तेमां उपर सूचव्या प्रमाणे भाषाना खरूप - भेदो पण खूब ज मळी आवे छे; तेथी एनी एक पर्या-लोचनात्मक पाठवाळी आवृत्ति थवी आवश्यक छे। एवी पर्यालोचना परथी आपणने ए जणाशे के कालक्रमें केवी रीते आपणी भाषामां शब्दोना उच्चारणोमां अने वर्णसंयोजनोमां फेरफारो थया छे, विगेरे विगेरे । अस्यारे तो केवळ प्रकाशमां मूकवानी दृष्टिए ज एनी एक यथालिखित पुरातन वाचना अहिं मुद्रित करवामां आवी छे। ईश्वरेच्छा हरो तो यथावसरे ए विषे विशेष प्रयत्न कराशे।

प्रस्तुत बुद्धिरासना अनुकरण रूपे, पाछळथी सारशिखामणरास, हितशिक्षा-रास आदि केटलीय नानी मोटी रचनाओ थई छे, जे उपरथी आ रासनी विशिष्टता जणाई आवे छे ।

आशा छे के गुजराती भाषाना अध्यापको अने अभ्यासको आ प्रयतने आदर आपी, एनुं उचित अवलोकन करशे।

भारतीय विद्या भवन आन्ध्रगिरि (अन्धेरी) विजयादशमी, सं० १९९७

– जिन विजय

शालिभद्रसरिकृत भरतेश्वर – बाहुबली रास

* (एक प्राचीनतम गूर्जरभाषा - पद्यकृति)

॥ नमोऽर्दद्भाः ॥

रिसद् जिणेसर पय पणमेवी, सरसति सामिणि मनि समरेवी;	
नमवि निरंतर गुरुचलणा ।।	१
भरह नरिंदह तणुं चरिचो, जं जुगी वसहांवलय वदीतो;	
बार वरिस विद्वं बंघवहं ॥	२
हुं हिव पमणिसु रासह छंदिहिं, तं जनमनहर मन आणंदिहिं;	
भाविहिं भवीयण संभछेउ ॥	ą
जंबुदीवि उवझाउरि नयरो, धणि कणि कंचिण रयणिहिं पवरो;	
अवर पवर किरि अमर परो ॥	g
करइ राज तिई रिसह जिणेसर, पावतिमिर मयहरण दिणेसर;	
वेजि तरणि कर तर्हि तपइए ॥	4
नामि सुनंद सुमंगल देवि, राय रिसहेसर राणी बेवि;	
रूवरेहि रित प्रीति जिन ॥	Ę
विवि बेटी जनमी सुनंदन, तेह जि तिहूयण मन आनंदन;	
भरह सुमंगछ देवि वणु ॥	૭
देवि सुनंदन बंदन बाहूबिल, भंजइ भिचड महाभड भूयबिल;	
अवर कुमर वर वीर घर ॥	6
पूरव छाख वेणि वेयासी, राजतणीं परि पुद्दवि पयासी;	
जुगि जुग मारग दाषीच्य ॥	8
चवसपुरि अरदेखर थापीय, तक्षशिका बाहुबलि आपीय;	
अवर भठाणुं वर नयर ॥	१०
दान शियइ जिणवर संवत्सर, विसयविरच वहइ संजमधर;	
	११

परमतालपुरि केवलनाणुं, तस ऊपन्नूं प्रगट प्रमाणूं;	
जाण ह्वुं भरहेसरहं ॥	१२
तिणि दिणि आउधसाळहं चक्को, आवीय अरीयण पडीय ध्र	सको;
भरह विमासइ गहगहीड ॥	१३
धनु धनु हुं घर मंडिल राउ, आज पढम जिणवर मुझ ता	च;
केवल लच्छि अलंकीयउ ॥	१४
पहिंछु ताय पाय पणमेसो, राजरिद्धि राणिमा फल लेसो;	
चक्करयण तव अणसरउं।।	१५
*	
वस्तु – चलीय गयवर, चलीय गयवर, गडीय गज्जंत,	
हूं पत्ते रोसभरि, हिणहिणंत हय थट्ट हस्रीय ।	
रह भय भरि टलटलीय मेरु, सेसु मणि मउड खिलीय ।	
सिउं मरुदेविहिं संचरीय, कुंजरी चडिउ नरिंद ।	
समोसरणि सुरवरि सहिय, वंदिय पढम जिणंद ॥	१६
पढम जिणवर, पढम जिणवर, पाय पणमेवि,	
आणंदिहिं उच्छव करीय, चक्करयण वलिवलिय पुज्जइ ।	
गडयडंत गजकेसरीय, गरुय नद्दि गजमेह गज्जइ ।	
बहिरीय अंबर तूर रवि, वलिउ नीसाणे घाउ ।	
रोमंचिय रिउ रायवरि, सिरि भरहेसर राउ॥	१७
*	
ठवणि १. प्रहि उगिम पूरविदिसिहिं, पहिलडं चालीय चक तु।	
धूजीय धरयल थरहर ए, चलीय कुलाचल चक्र तु ॥	१८
पूठि पीयाणुं तच दियए, भयबिल भरह नरिंद तु ।	
पिडि पंचायण परदलहं, इलियलि अवर सुरिंद तु ॥	१९
वजीय समहरि संचरीय, सेनापति सामंत तु ।	
मिलीय महाधर मंडलीय, गाढिम गुण गर्जात तु ॥	२०
गडयडतु गयवर गुडीय, जंगम जिम गिरिशृंग तु । 🔧	
सुंड दंड चिर चाळवइं, वेलइं अंगिहिं अंग तु ॥	२१
गंजइं फिरि फिरि गिरि सिहरि, भंजइं तरअर डालि तु।	
अंकस वसि आवइं नहीं य, करइं अपार अणालि तु॥	२१

दीसइं इसमिसि इणहणइं ए, तरवर तार तोषार तु।	
संदृद्दं सुरढइं सेडवीय, मन मानइं असुवार तु ॥	२ 🍇
पास्तर पंस्ति कि पंस्तरू य, ऊडाऊडिहिं जाइ तु।	
हुंफइं तळपइं ससइं घसइं, जडइं जकारीय धाइ तु ॥	२४
फिरइं फैकारइं फोरणइं, फुड फेणाउलि फार तु।	
तरणि तुरंगम सम तुलइं, तेजीय तरल ततार तु ॥	२५
घडहडंत घर द्रमद्रमीय, रह रूंघइं रहवाट तु ।	
रव भरि गणइं न गिरि गहण, थिर थोभइं रहथाट तु ॥	२६
चमरचिंघ घज लहलहइं ए, मिल्हइं मयगल माग तु।	
वेगि वहंता तींह तणइं ए, पायल न लहइं लाग तु ॥	२७
द्डवडंत दह दिसि दुसह ए, सरिय पायक चक तु।	
अंगोअंगिइं अंगमइं, अरीयणि असणि अणंत तु ॥	२८
वाकइं तलपइं तालि मिलिइं, हिण हिण हिण पभणंत तु।	
आगिल कोइ न अछइ भछु ए, जे साहमु झूझंत तर ॥	२९
दिसि दिसि दारक संचरीय, वेसर वहइं अपार तु।	
संष न लाभइं सेन तणीं, कोइ न लहइं सुधि सार तु ॥	₹ ०
बंधव बंधवि नवि मिलइं ए, न बेटा मिलइं बाप तु ।	
सामि न सेवक सारवइं, आपिहिं आप विद्याप तु॥	३१
गयविं चडी च च घपों, पिंडि पयंड भूयदंड तु।	
नालीय निहुं दिसि चळचलीय, दिइं देसाहिव दंड तु ॥	३२
वज्जीय समह्रि द्रमद्रमीय, घण निनाद नीसाण तु ।	
संकीय सुरवरि सग्ग सवे, अवरहं कमण प्रमाण तु ॥	3 3
डाक दूक त्रंबक तणइं ए, गाजीय गयण निहाण तु ।	
षट षंडह षंडाहिवहं, चालतु चमकीय भाण तु ॥	38
भेरीय रव भर तिहुं भूयणि, साहित किमइं न माइ तु।	
कंपिय पय भरि शेष रहिच, विण साहीउ न जाइ तु ॥	३५
सेर डोडावइ धरणिहिं ए, टूंक टोड गिरिग्रंग तु ।	
सायर संयल वि झलझलीय, गहलीय गंग तुरंग तु ॥	3 6

	स्तर रिव बूंदीय मेहरवि, महियित मेहंघार हु।	
	उजूआलइ आउघ तणइं, चालइं रायखंघार तु ॥	ø.
	मंडिय मंडळवइ न मुहे, सिस न कवइं सामंत तु ।	
	राउत राउतवट रहीय, मनि मूंझइं मतिवंत तु ॥	36
	कटक न कवणिहिं भर तणुं, भाजइ भेडि भडंत दु।	
	रेलइं रयणायर जमले, राणोराणि नमंत तु ॥	३९
	साठि सहस संवच्छरहं, भरहस भरह छ खंड तु।	
	समरंगणि साधइ सधर, वरतइ आण अखंड तु ॥	४०
	बार वरिस नमि विनमि, भड भिडीय मनावीय आण दु ।	
	आवाठी तिं गंग तणइ, पामइ नवह निहाण तु ॥	8 ६
	छत्रीस सहस मज्डुध सिनं, चऊद रयण संपत्त तु ।	
	आविड गंगा भोगवीय, एक सहस वरसाड तु ॥	४२
	*	
ठवणि	२. तं तिहिं आउधसाल, आवइ आउधराउ निव ।	
	तिणि खिणि मणि भूपाल, भरह भयह लोलावडओ ॥	83
	बाहिरि बहूय अणालि, अल्र्ञारीय अहनिसि करइ ए।	
	अति उतपात अकालि, दाणव दल वरि दाषवइ ए ॥	88
	मतिसागर किणि काजि, चक त(न) पुरि परवेस करइ।	
	तइं जि अम्हारइ राजि, घोरीय घर घरीउ घरहं ॥	४५
	देव कि थंभी उप्य, कवणि कि दानव मानविहिं।	
	एउ आखि न मुझ भेेड, वयरीय वार न लाईइ ए ॥	४६
	बोलइ मंत्रिमयंक, सांभिल सामीय चक्कघरो ।	
	अवर नही कोइ वंकु, चक्करयण रहवा तणड ॥	80
	संकीय सुरवर सामि, भरद्देसर तूंय भूय भवणे ।	
	नासइं ति सुणीय नामि, दानव मानव किह कविण ॥	86
	नवि मानइं तूंय आण, बाहूबिल बिहुं बाहुबले ।	
	वीरह वयर विनाणु, विसमा विहडई वीरवरो ॥	४९
	तीणि कारणि नरदेव, चक न आवइ नीय नयरे।	
	विण बंधव तूंय सेव, सहू कोइ सामीय साचवइ ए ॥	40

तं ति सुणीय तीणइ तालि, ऊठीच राच सरोसभरे।	
भमइ चडावीय भालि, पभणइ मोडवि मूंछि मुहे ॥	48
जु न मानइ मझ आण, कवण सु कहीइ बाहुबले।	
ली लहं लेसु ए राण, भंज चं मुज भारिहिं भिडीय ।।	५२
स मतिसागर मंति, विल वसुहाहिव वीनवइ।	
नवि मनि कीजइ स्रंति, बंघव सिउं कहि कवण बलो ॥	43
दूत पठावीयइ देव, पहिल्डं वात जणावीइ ए।	
जु नवि आवइ देव, तु नरवर कटकई करउ।।	५४
तं मनि मानीय राच, वेगि सुवेगहं आइसइ ए।	
जईय सुनंदाजानं, आण मनावे आपणीय ॥	44
जां रथ जोत्रीय जाइ, सु जि आएसिहिं नरवरहं।	
फिरि फिरि साइ्मु थाइ, वाम तुरीय वाहणि तणउ ॥	५६
काजठकाल बिराल, आवीय आहिहिं ऊतरइ ए।	
जिमणं जम विकराल, खरु खु-रव उन्नलीय ॥	५७
सूकीय बावल डालि, देवि बइठीय सुर करइ ए।	
झंपीय झाल मझालि, घूक पोकारइ दाहिणओ ।।	46
जिमणइं गमइं विषावि, फिरीय फिरीय शिव फे करइ ए ।	
डावीय डगडइ सादि, भयरव भैरव रवु करइ ए॥	48
वड जखनइं कालीयार, एकऊ बेढुं ऊतरइ ए।	
नींजलीच अंगार, संचरतां साह्य हुइ ए ॥	Ęo
काल भुयंगम काल, दंतीय दंसण दाखवइ ए।	
आज अखूटउ काल, पूटच रहि रहि इम भणइ ए ॥	६१
जाइ जाणी दूत, जीवह जोषि खांगमइ ए।	, -
जैम भमंतउ भूव, गिणइ न गिरि गुह वण गहण ॥	६२
तई ह नेसिम वेस, न गिणइ नइ दह नींझरण।	
लंबीय देस असेस, गाम नयर पुर पाटणह ॥	48
बाहरि बहूव आराम, सुरवर वह तां नीझरण।	• •
मणि तोरण अभिराम, रेहद धवलीय धवळहरो।।	Ęy
After many and an extend of the contract of the contract of	• •

पोयणपुर दीसंति, दूत सुवेग सु गहगहीउ ।	
व्यवहारीया वसंति, धणि कणि कंचणि मणि पवरो ॥	Ęų
धरणि तरणि ताडंक, जेम तुंग त्रिगढुं छहइ ए।	
एह कि अभिनव लंक, सिरि कोसीसां कणयमय।।	६६
पोढा पोलि पगार, पाडा पार न पामीइं ए ।	
संख न सीहदूंयार, दीसइं देेेेेेे उह दिसिइं ।।	Ęv
पेखवि पुरह प्रवेसु, दूत पहूतउ रायहरे ।	
सिउं प्रतिहार प्रवेसु, पामीय नरवर पय नमइ ए ॥	६८
चउकीय माणिक थंभ, माहि बईठउ बाहुबले ।	
रूपिहिं जिसीय रंभ, चमरहारि चालइं चमर ॥	६९
मंडीय मणिमइ दंड, मेघाडंबर सिरि धरिय ।	
जस पयडे भूयुदंडि, जयवंती जयसिरि वसइं ए।।	90
जिम उदयाचिल सूर, तिम सिरि सोहइ मणिमुकुटो ।	
कसतुरीय कुसुम कपूर, कुचूंबरि महमहइ ए ॥	७१
झलकइ ए कुंडल कानि, रवि शशि मंडीय किरि अवर।	
गंगाजल गजदानि, गाढिम गुण गज गुडअडइं ए॥	७२
उरवरि मोतीय हार, वीरवलय करि झलहलइ ए।	
तवल अंगि सिणगार, खलक ए टोडर वाम[इ] ए ॥	७३
पहिरणि जादर चीर, कंकोलइ करिमाल करे।	
गुरूड गुणि गंभीर, दीठड अवर कि चक्कधर ॥	७४
रंजिड चित्ति सु दूत, देषीय राणिम तसु तणीय।	
धन रिसहेरपूत, जयवंतु जुगि बाहुबले ।।	હ ધ
बाहुबिल पूछेइ कुवण, काजि तुम्हि आवीया ए।	
दूत भणइ निज काजि, भरहेसरि अम्हि पाठव्या ए ॥	७६

*

वस्तु – राव जंपइ, राव जंपइ, सुणि न सुणि दूत; भरहखंड भूमीसरहं, भरह राव अम्ह सहोयर। सवाकोडि कुमरिहिं सहीय, सूरकुमर तिहें अवर नरवर। मंति महाघर मंडलिय, अंतेचरि परिवारि। सामंत्रह सीमाड सह, कहि न कुसल सविवार ॥

99

दूत पभणइ, दूत पभणइ, बाहुबिल राउ: भरहेसर चक्कघर, कहि न कवणि दृहवणह किज्जइ। जिहु लहु बंघव तूंय, सरिस गडयडंत गज मीम गजड । जइ अंधारइ रवि किरण, भड भंजइ वर वीर। तु भरहेसर समर भरि, जिप्पइ माहरी धीर ॥

७८

ठवणि ३. वेगि सुवेग सु बुहइ, संभि बाहूबिह ।

७९

राउस कोइ तुह तुहुइ, ईणिइं अछइ रवितिल ।। जां तव बंधव भरह नरिंदो, जसु भुइं कंपइं सिगा सुरिंदो । जीणइं जीतां भरह छ षंड, म्लेच्छ मनाव्या आण असंड ॥ भिंड भड़ंत न भूयबिल भाजइ, गडयडंतु गढि गाढिम गाजइ। सहस बतीस मजडाधा राय, तूंय बंधव सवि सेवइं पाय ॥ ८१ चऊद रयण घरि नवइं निहाण, संख न गयघड जस केकाण । हूंय हवडां पाटह अभिषेको, तूंय निव आवीय कवण विवेको॥ ८२ विण बंधव सवि संपय ऊणी, जिम विण छवण रसोइ अछणी। त्रम्ह दंसण उतकंठिउ राउ, नितु नितु वाट जोइ तुह भाउ।। ८३ वहर सहोयर अनइं वड वीर, देव ज प्रणमइं साहस धीर। एक सीह अनइं पाखरीउ, भरहेसर नइं तइं परवरीउ।। CB

ठवणि ४. तु बाहुबलि जंपइ, कहि वयण म काचुं।

भरहेसर भय कंपइ, जं जग तुं साचुं ॥ 64 समरंगणि तिणि सिउं कुण काछइ, जीह बंधव मइं सरिसउ पाछइ। जावंत जंबुदीवि तसु आण, तां अम्ह कहीइ कवण ए राण ॥ ८६ जिम जिम सु जि गढ गाढिम गाढउ, हय गय रह वरि करीय सनादु । तस अरधासण आपइ इंदो, तिम तिम अम्ह मनि परमाणंदो ।। ८७ जुन आव्या अभिषेकह वार, तु तिणि अम्ह निष कीधा सार । वस्रु राउ अम्ह वस्रु जि भाई,जिंह भावइ तिहां मिलिसिउं जाई ॥८८

अम्ह ओलगनी वाट न जोई, मड भरहेसर विकर न होइ। मझ बंघव नवि फीटइ कीमइ, लोमीया लोक भणइ लख ईम्हई॥ ८९

*

ठवणि ५. चालि म लाइसि वार, बंधव भेटीजइ।

चूकि म चींति विचार, मूंय वयण मुलीजइ।। ९० वयण अम्हारुं तूय मिन मानि, भरह नरेसर गणि गजदानि। संतूठ दिइ कंचण भार, गयघड तेजीय तुरल तुषार।। ९१ गाम नयर पुर पाटण आपइ, देसाहिव थिर थोभीय थापइ। देय अदेय नं देतु विमासइ, सगपणि कह निव किंपि विणासइ।। ९२ जा ण राज ओलिगि जाणइ, माणण हार विरोषिइं मारइ। प्रतिपन्न प्रतिपालइ, प्रारथि निव घडी विमरालइ।। ९३ तिणि सिषं देव न कीजइ ताडज, सु जि मनाविइ मांड म आडज। हुं हितकारणि कहुं सुजाण, कूढ़ं कहूं तु भरहेसर आण।। ९४

*

वस्तु - राड जंपइ, राड जंपइ, सुणि न सुणि दूत;
त विहि छहीड भाछहिल, तं जि छोय भवि भविहिं पामइ।
ईमइ नीसत नर ति(नि) गुण, उत्तमांग जण जणह नामइ।
संभ पुरंदर सुर असुर, तीहं न छंघइ कोइ।
छन्मइ अधिक न ऊण पणि, भरहेसर कुण होइ।। ९५

*

ठवणि ६. नेसि निवेसि देसि घरि मंदिरि, जिल थिल जंगलि गिरि गुह कंदरि। दिसि दिसि देसि देसि दीपंतरि, लही जं लाभइ जुगि सचराचरि॥९६ अरिरि दूत सुणि देवन दानव, मिहमंडिल मंडल वैमानव। कोइ न लंघइ लहीया लीह, लाभइ अधिक न ज्ला दीह।। ९७ धण कण कंचण नवइ निहाण, गय घड तेजीय तरल केकाण। सिर सरवस सपतंग गमीजइ, तोइ नीसत्त पणइ न नमीजइ॥ ९८

ठविण ७. दूत भणइ पहु भाई, पुत्रिहिं पामीजइ। पइ लागीजइ भाई, अम्ह कहीं कीजइ॥

99

अवर अठाणूं जु जई पहिछं, मिलसिइं तु तुझ मिलिउं न सयलुं। किह विलंब कुण कारणि कीजइ, माम म नीगमि वार वलीजइ।। १०० वार वरापह करसण फलीजइ, ईणि कारणि जई विहला मिलीइ। जोइ न मन सिउं वात विमासी, आगइ वारूअ वात विणासी।। १०१ मिलिउ न किहां कटक मेलावइ, तड भरहेसर तइं तेडावइ। जाण रषे कोइ झूझ करेसिइ,सहू कोइ भरह जि हियडइ धरेसिइ।।१०२ गाजंता गाढिम गज मीम, ते सिव देसह लीधा सीम। भरह अछइ भाई भोलावड, तड तिणि सिउं न करीजइ दावड।। १०३

वस्तु — तव सु जंपइ, तव सु जंपइ, बाहुबिल राउ;
अप्पह बाह भजां न बल, परह आस कहइ कवण कीजइ।
सु जि मृरष अजाण पुण, अवर देषि बरवयइ ति गज्जइ।
हुं एकहाउ समर भिर, भड भरहेसर घाइ।
भंजउं मुजबिल रे मिडिय, भाह न भेडि न थाइ॥
१०४

ठवणि ८. जइ रिसहेसर केरा पूत, अवर जि अम्ह सहोयर दूत ।
ते मिन मान न मेल्हइं की मइं, आलई याण म झंषिसि ईम्हइ ॥ १०५
परह आस किणि कारणि की जइ, साहस सइंवर सिद्धि वरी जइ ।
ही जं अनइ हाथ हत्थी यार, एह जि वीर तणउ परिवार ॥ १०६
जइ कीरि सीह सीयालिइं खाजइ, तु बाहुबलि भूयबिल भाजइ ।

जु गाइं वाघिणि षाई जइ, अरे दूत तु भरह जि जीपइ॥ १०७

ठवणि ९. जु नवि मन्नसि आण, बरबहं बाहूबिल ।

लेसिइ तु तूं प्राण, भरहेसर भूयविल ॥ १०८ जस छन्नवइ कोडि छइं पायक, कोडि बहुत्तरि फरकइं फारक । नर नरवर कुण पामइ पारो, सही न सकीइ सेनाभारो ॥ १०९ जीवंता विद्वि सहू संपाहइ, जु तुडि चिंडिस तु चिंडिउ पवाहइ। गिरि कंदिर अरि छपिउ न छूटइ, तूं बाहूबिल मिर म अखूटइ॥ ११० गय गदह हय इड जिम अंतर, सीइ सीयाल जिसिउ पटंतर। भरहेसर अन्नइ तूंय विद्राउ, छूटिसि किम्हइ करंत न निहु ॥ १११

सरवसु सुंपि मनावि न भाई, कि कुणि कूडी कुमति विलाई।
मूंझि म मूरष मिर म गमार, पय पणमीय किर किर न समार।। ११२
गढ गंजिन भड भंजिन प्राणि, तई हिव सारइ प्राण विनाणि।
अरे दूत बोली निव जाण, तुंह आन्या जमह प्राण।। ११३
किह रे भरहेंसर कुण कहीइ, मई सिनं रिण सुरि असुरि न रहीइ।
जे चिक्कई चक्रवृत्ति विचार, अम्ह नगिर कूंभार अपार।। ११४
आपणि गंगातीरि रमंता, धसमस धूंधिल पडीय धमंता।
तई ऊलालीय गयणि पडंतन, करुणा करीय वली झालंतन।। ११५
ते पिर कांइ गमार वीसार, जु तुडि चिडिस तु जाणिसि सार।
जन मन्डुधा मन्ड उतारनं, रुहिरु रिझि जु न हय गय तारनं।। ११६
जन मारनं भरहेसर रान, तन लाजइ रिसहेसर तान।
भड भरहेसर जई जणावे, हय गय रह वर वेगि चलावे।। ११७

वस्तु - दूत जंपइ, दूत जंपइ, सुणि न सुणि राउ;

तेह दिवस परि म न गिणसि, गंगतीरि खिइंत जिणि दिणि।
चहंतइं दल भारि जसु, सेससीस सलसलइ फणिमणि।
ईमई याण स मानि रणि, भरहेसर छइ दूरि।
आपापूं वेढिउं गणे, कालि ऊगंतइं सूरि।।

११८

दूत चिल्लंड, दूत चिल्लंड, कहीय इम जाम; मंतीसरि चिंतविड, तु पसाड दूतह दिवारइ। अवर अठाणूं कुमर वर, वाइ सोइ पहतु पचारइ। तेह न मनिड आविड, विल भरहेसरि पासि। अखई य सामिय संधिवल, वंधवसिडं म विमासि॥

११९

ठवणि १०. तड कोपिहिं कलकलीड काल के ... य कालानल,

कंकोरइ कोरंबीयउ करमाल महाबल । काहल कलयिल कलगलंत मउडाधा मिलीया, कलह तणइ कारणि कराल कोपिहिं परजलीया ॥ हऊउ कोलाहल गहगहाटि गयणंगणि गज्जिय, संचिरया सामंत सहड सामहणीय सज्जीय ।

१२०

गडयडंत गय गडीय गेलि गिरिवर सिर ढालइं,	
गूगलीया गुलणइ चलंत करिय ऊलालइं ॥	१२१
जुडइं मिडइं भदहडइं खेदि खडखदइं खडाखडि,	
घाणीय घूणीय धोसवइं दंतूसिल दोत[तडा]डि ।	
खुरतिल खोणि खणंति खेदि तेजीय तरवरिया,	
समइं घसइं धसमसइं सादि पय सइं पाषरिया।।	१२२
कंघग्गल केकाण कवी करडइं कडीयाली,	
रणणइं रवि रण वस्तर सस्तर घण घाघरीयाला ।	
सींचाणा वरि सरइं फिरइं सेलइं फोकारइं,	
ऊडइं आडइं अंगि रंगि असवार विचारइं ॥	१२३
घसि धामइं धडहडइं घरणि रिय सारिथ गाढा।	
जडीय जोध जडजोड जरद सन्नाहि सनाढा ।	
पसरिय पायल पूर कि पुण रलीया रयणार ।	
छोह छहर वरवीर वयर वहवटिइं अवायर ॥	१२४
रणणीय रवि रण तूर तार त्रंबक त्रहत्रहीया,	
ढाक द्वक ढम ढमीय ढोल राजत रहरहीया।	
नेच नीसाण निनादि नींझरण निरंभीय,	
रणभेरी भुंकारि भारि भूयबिहिं वियंमीय।।	१२५
चल चमाल करिमाल कुंत कडतल कोदंड,	
झलकई साबल सबल सेल इल मसल प्यंड ।	
सींगिणि गुण टंकार सहित बाणाविल ताणइं,	
परशु उलालइं करि घरइं भाला ऊलालइं ॥	१२६
तीरीय तोमर भिंडमाल डबतर कसबंध,	
सांगि सकति तहआरि छुरीय अनु नागतिबंध ।	
हय खर रिव ऊछडीय खेह छाईय रिवमंडल,	
घर घूजइ कलकलीय कोल कोपिउ काहडूल ॥	१२७
टलटलीया गिरिटंक टोल खेचर खलभलीया,	
कडडीय कूरम कंधसंधि सायर झलहलीया।	

चहीय समहरि सेससीसु सलसलीय न सक्कइ,	_
कंचणगिरि कंधार भारि कमकमीय कसक्कइ ॥	१२८
कंपीय किंनर कोडि पडीय हरगण हडहडीया,	
संकिय सुरवर सग्गि सयल दाणव दडवडीया ।	
अतिप्रलंब लहकइं प्रलंब वलविंध चिहुं दिसि,	
संचरीया सामंत सीस सीकिरिहिं कसाकसि।।	१२९
जोईय भरह नरिंद कटक मूंछह वल घझईं,	
कुण बाहूबिल जे उ बरव मई सिउं बल बुल्लइ ।	
जइ गिरि कंदरि विचरि वीर पइसंतु न छूटइ,	
जइ थली जंगलि जाइ किम्हइ तु मरइ अषूटइ ।।	१३०
गज साहणि संचरीय महु णर वेढीय पोयणपुर।	
वाजीय बूंब न बहकीयउ बाहूबिल नरवर ।	
तसु मंतीसरि भरह राउ संभालीउ साचुं,	
ए अविमांसिउं कीउं काइं आज जि तइं काचुं ॥	१३१
बंधव सिउं नरवीर कांइं इम अंतर देषइ,	
लहु बंधव नीय जीव जेम कहि कांइं न लेखइ।	
तड मनि चिंतइ राय किसिडं एय कोइ पराठीड,	
ओसरी उवनि वीर राउ रहीउ अवाठीउ ॥	१३२
गय आगलीया गलगलंत दीजइं हय लास,	
हुई हसमस····भरहराय केरा आवास ।	
एकि निरंतर वहइं नीर एकि ईंधण आणइं,	
एक आस्रसिइं परतणुं पांगु आणिउं तृण ताणइं ॥	१३३
एकि ऊतारा करीय तुरीय तलसारे बांधइं,	
इकि भरडइं केकाण खाण इकि चारे रांधइं।	
इकि झीलीय नय नीरि तीरि तेतीय बोलावइं,	
एकि वारू असवार सार साहण वेलावइं॥	१३४
एकि आकुलीया तापि तरल ति चडीय झंपावइं,	• •
एकि गृहर साबाण सुहड चउरा दिवरावइं।	

सारीय सामि स नामि आदिजिण पूज पयासइं. कसतूरीय कुंकुम कपूरि चंदनि वनवासइं।। १३५ पूज करीउ चक्ररयण राउ बइठउ भूं जाई, वाजीय संख असंख राउ आव्या सवि धाई। मंडलवइ मउडुघ मु(सु?)हड जीमइं सामंतह, सइं हत्थि दियइ तंबोल कणय कंकण झलकंतह ॥ १३६ वस्तु – दूत चलीउ, दूत चलीउ, बाहुबलि पासि; भणइ भूर नरवर निसुणि, भरह राउ पयसेव कीजइ। भारिहिं भीम न कवणि रणि, एउ भिडंत भूय भारि भज्जइ। जइ नवि मूरष एह तणीं, सिरवरि आण वहेसि। सिउं परिकरिइं समर भरि, सहूइ सयरि सहेसि ॥ १३७ राउ बुहुइ, राउ बुहुइ, सुणि न सुणि दूत; ताय पाय पणमंतय, मुझ बंधव अति खरु लज्जाइ। तु भरहेसर तसतणीय, कहि न कीम अम्हि सेव किजाइ। भारिइं भूयबिल जु न भिडउं, भुज भंजु भडिवाउ। तं लज्जइ तिहूयण धृणीं, सिरि रिसहेसर ताउ।। १३८ ठवणि ११. चलीय दूत भरहेसरहं तेय वात जणावइ, कोपानिल परजलीय वीर साहण पलणावइ। लागी य लागि निनादि वादि आरति असवार. बाहुबलि रणि रहिउ रोसि मांडिउ तिणि वार ॥ 838 ऊड कंडोरण रणंत सर बेसर फूटइं, अंतरालि आवइं ई याण तीहं अंत अखूटइं। राउत-राउति योध-योधि पायक-पायिकहिं, रहवर-रहवरि वीर-वीरि नायक-नायिकइं।। १४० वैदिक विदइं विरामि सामि नामिहिं नरनरीया, मारइं मुरढीय मूंछ मेच्छ मनि मच्छर भरीया। ससइं हसइं धसमसइं वीरघड वड नरि नाचइं,

राषस री रा रव करंति रुहिरे सवि राचइं॥

१४१

१४२

१४३

चांपीय चुरइं नरकरोडि भूयबिल भय भिरडईं, विण हथीयार कि वार एक दांतिहिं दल करडइं। चालइं चालि चम्माल चाल करमाल ति ताकइं, पडइं चिंध झूझइं कबंध सिरि समहरि हाकइं।। रुहिर रिह तिहें तरइं तुरंग गय गुडीय अमूंझइ, राउत रण रसि रहित बुद्धि समरंगणि सुझइं। पहिलइ दिणि इम झूझ हवुं सेनह मुखमंडण, संध्या समइ ति वारणुं ए करइं भट विहुं रण ॥

ठवणि १२. हिवं सरस्वती धउल –

तु तहिं बीजए दिणि सुविहाणि, ऊठीउ एक जि अनलवेगो, सडवड समहरे वरसए बाणि, छयल सुत छलीयए छावडु ए। अरीयण अंगमइ अंगोअंगि, राउतो रामति रणि रमइं ए, लडसड लाडउ चडीय चडरंगि, आरेयणि सयंवर वरइं ए॥ १४४

त्रूटक - वर वरइं सयंवर वीर, आरेणि साहस धीर। मंडलीय मिलिया जान, हय हीस मंगल गान। ह्य हीस मंगल गानि गाजीय, गयण गिरि गुह गुमगुमई, धमधमीय धरयल ससीय न सकइ, सेस कुलगिरि कमकमई। धसधसीय धायइं धारधा विल, धीर वीर विहंडए, सामंत समहरि, समु न लहइं, मंडलीक न मंडए।।

१४५

धुं मंडए माथए महीयिल राउ, गाढिम गय घड टोछवए, पिडि पर परवत प्राय, भडधड नरवए नाचवइ ए। काल कंकोलए करि करमाल, झाझए झूझिहिं झलहलइए, भांजए भड घड जिम जम जाल, पंचायण गिरि गडयडए ॥

त्रृटक - गडयडइं गजदिल सीहु, आरेणि अकल अवीह। धसमसीय हयदल धाई, भडहडई भय भडिवाइ॥ भडहडइं भय भड़वाइ भुयबिल, भरीय हुइ जिम भींभरी, तिहें चंद्रचूडह पुत्र परबिल, अपिउ नरवइ नर नरतिरी। वसमतीय नंदण वीर विसमूं, सेल सर म दिखाडए, रहु रहु रे हिणि हिण.....भणंतू, अपड पायक पाडए॥

*

भावल — पाडीय सुखेय सेणावए दंत, पूंठिहिं निहणीय रणरणीय, सूर कुमारह राज पेखंत, भिरडए भूयदंड बेज····ः। नयणिहिं निरषीय कुपीयज राज, चक्करयण तज संभरइए, मेल्हइए तेह प्रति अति सकसाज, अनलवेगो तहिं चिंतवइ ए ॥ १४८

त्रूटक — चिंतवईय मुहडह राउ, जो अई उपूटउं आउ।
हिव मरण एह जि सीम, रंजईअ चऋवृत्ति जीम ॥
रंजवईय चऋवृत्ति जीम इम, भिण चकु मुहिहिं षडपली,
संवरिउ सूरउ सूरमंडलि, चकु पुहचइ तिहं वली।
षडपडीउ नंदण चंद्रचृडह, चंद्रमंडल मोहए,

झलहलीय झालि झमालि तुद्धिहिं, चक्क तिहं तिहं रोहए।।

१४९

१४७

धिउल — रोही उराउत जाइ पातालि, विज्ञाहर विज्ञाबलिहिं, चक पहूचए पूठि तीणि तालि, बोलए बलवीय सहसजखो । रेरे रहि रहि कुपींच राउ, जित्थु जाइसि तित्थु मारिवु ए, तिहूयणि कोइ न अछइ अपाय, जय जोषिम जीणइ जीवीइ ए ॥१५०

त्रृदक — जीविवा छंडीय मोह, मिन मरिण मेल्हीय थोह, समरीय तु तीणि ठामि, इक आदि जिणवर सामि। [इक आदि जिणवर सामि†] समरीय, वज्जपंजर अणसरइ, नरनरीउ पाषिठ फिरीउ तस सिरु, चक्क ठेई संचरइ। पयकमल पुज्जइ भरह भूपित, बाहुबिल बल खलभलइ, चक्रपाणि चमकीय चींति कलयिल, कलह कारणि किलगिलइ॥ १५१

[ै] मूळ प्रतिमां अहिं लखनारना हाये आ पादनो ए पूर्व अर्ध भाग लखतां छूटी गयो छे.

धाउल - कलगिलइ चक्रधर सेन संग्रामि, बोलए कवण सु बाहुबले, तड पोयणपुर केरड सामि, बरवहं दीसए दस गणु ए। कवण सो चक्क रे कवण सो जाख, कवण सु कहीइए भरह राउ। सेन संहारीय सोधडं साष, आज मल्हावडं रिसहवंसो॥ १५२

ठवणि १३. हिवं चउपई –

चंद्रचुड विज्ञाहर राउ, तिणि वातइं मनि विहीय विसाउ। हा कुल्रमंडण हा कुलवीर, हा समरंगणि साहसधीर ॥ कहीइ कहि नइं किसिउं घणुं, कुछ न छजाविउं तइं आपणउं। तइं पुण भरह भलाविउ आप, भलु भणाविउ तिहूयणि बापु ॥१५४ सु जि बोल्ड बाहूबलि पासि, देव म दोहिलुंई हीइ विमांसि । कहि कुण ऊपरि कीजइ रोसु, एह जि दैवहं दीजइ दोसु ।। १५५ सामीय विसम् करम विपाउ, कोइ न छूटइ रंक न राउ। कोइ न भांजइ लिहिया लीह, पामइ अधिक न ओछा दीह ॥१५६ भंजरं भूयबिल भरह निरंद, मइं सिरं रिण न रहइ सुरिंद् । इम भणि बरवीय बावन वीर, सेलइ समहरि साहस धीर ॥ १५७ धसमस धीर धसइं धडहडइं, गाजइ गजदिल गिरि गडयडइं। जसु भुइ भडहड हडइ भडक, दल दडवडइ जि चंड चडक ।। १५८ मारइ दारइ खल दल खणइ, हेड हणोहणि हयदल हणइ, अनलवेग कुण कूखइं अछइ, इम पचारीय पाडइ पछइ।। १५९ नरु निरुवइ नरनरइ निनादि, वीर विणासइ वादि विवादि । तित्रि मास एकछुउ भिडइ, तउ पुण पूरउं चक्कह घडइ ॥ १६० चऊद कोडि विद्याधर सामि, तड झूरइ रतनारी नामि। दल दंदोलिउं दउढ वरीस, तउ चिक्कइं तसु छेदीय सीस।। रतनचूड विद्याधर धसइ, गंजइ गयघड हीयडइ हसइ। पवनजय भड भरहु नरिंद, सु जि संहारीय हसइं सुरिंद ॥ १६२ बाहुळीक भरहेसरतणु, भड भांजणीय भिडीउ घणु । सुरसारी बाहूबलिजाउ, भडिउ तेण तिह फेडीय ठाउ ।। १६३ अमितकेत विद्याधर सार, जस पामीइ न पौरुष पार। चहीउ चक्रधर वाजइ अंगि, चूरिउ चक्रिहिं चडिउ चउरंगि॥ १६४

समरबंध अनइ वीरह वंध, मिलीच समहिर विहुं सिउं बंध। सात मास रहीया रणि वेड, गई गहगहीया अपछरा छेड ॥ १६५ सिरताली दुरीताली नामि, भिडइं महाभड वेउ संप्रामि। आच्या घरवहं बाथोबाथि, परभवि पुहता सरसा साथि ॥ १६६ महेन्द्रचूड रथचूड नरिंद, झूझइं हडहड हसइं सुरिंद । हाकइं ताकइं तुलपइं तुलइं, आठि मासि जई जिमपुरि मिलइं ॥ १६७ दंड लेई घसीउ युरदादि, भरतपूत नरनरइ निनादि। गंजीउ बिछ बाहूबिलतणउ, वंस मल्हाविड तीणि झापणु ॥ १६८ सिंहरथ ऊठीड हाकंत, अमितगति झंपिड आवंत। तित्रि मास घड धूजिउं जास, भरह राउ मनि वसिउ वासु॥ १६९ अमिततेज प्रतपइ तिहं तेजिं, सिउं सारंगिइं मिलिउ हेजि। धाइं धीर हणइं वे बाणि, एक मासि नीवड्या नीयाणि ॥ १७० कुंडरीक भरहेसरजाउ, जस भड भडत न पाछउ पाउ। द्रठडीय दलि बाहूबलि राय, तउ पयपंकइ प्रणमीय ताय ॥ १७७ सूरिजसोम समर हाकंत, मिलिया तालि तोमर ताकंत। पांच वरिस भर भेलीय घाइ, नीय नीय ठामि लिवारिआ राइ॥ १७२ इकि चूरई इकि चंपई पाय, एकि डारई एकि मारई घाइ। झलझळंत झूझइ सेयंस, धनु धनु रिसहेसरनुं वंस ॥ EUS सकमारी भरहेसरजाउ, रण रिस रोपइ पहिलड पाउ। गिणइ न गांठइ गजदल हणइ, रणरिस धीर धणावइ धणइ ॥ १७४ वीस कोडि विद्याधर मिली, ऊठिउ सुगति नाम किलिगिली। सिवनंदनि सिउं मिलीउ तालि, बासिठ दिवसि बिहुं जम जालि।।१७५ कोपि चढिउ चहिउ चक्रपाणि, मारउं वयरी बाणविनाणि। मंडी रहिच बाहबिल राउ, भंजउं भणइ भरह भडिवाउ।। १७६ बिहुं दिल वाजी रणि काहली, खलदल खोणि खे खलभली। धूजइं घसकीय घड थरहरइं, वीर वीर सिउं सयंवर वरइं॥ १७७ उडीय खेह न सूझइ सूर, नवि जाणीइ सवार असूर। पडइं सुहड घड धायइं धसी, हणइं हणोहणि हाकइं हसी ।। १७८

गहयड गयघड ढीचा ढलइं, सूना समा तुरंग मल तुलइं। वाजइं घणुही तणा धोंकार, भाजइं भिडत नभेडीगार ॥ वहइं रुहिर नइ सिरवर तरइं, री री या टरणि राषस करइं। हयद्ल हाकइ भरह नरिंद, तु साह्सु लहइ सिगा सुरिंद् ॥ भरहजाउ सर्भु संग्रामि, गांजइ गजदल आगलि सामि । तेर दिवस भड पडीउ घाइ, धूणी सीस बाहूबिल राइ।। १८१ तींह प्रति जंपइ सुरवर सार, देषी एवड़ भडसंहार। कांइ मरावउ तम्हि इम जीव, पडसिउ नरिक करंता रीव।। १८२ गज ऊतारीय बंधव बेउ, मानिउं वयण सुरिंद्ह तेउ। पइसइं मालाखाडइ वीर, गिरिवरं पाहिइं सबल सरीर ।। 863 वचनझूझि भड भरहु न जिणइ, दृष्टिझूझि हारिउं कुण अ णइ। दंडिझूझि झड झंपीय पडइ, बाहु पासि पडिउ तडफडइ ।। १८४ गूडासमु धरणि मझारि, गिउ बाहूबिल मुष्टिप्रहारि। भरह सबल तइं तीणइं घाइ, कंठसमाणउ भूमिहिं जाइ॥ १८५ कुपीच भरह छ खंडह धणी, चक्र पठावइ भाई भणी। पाखिल फिरी सु वलीउं जाम, किर बाहूबिल धरिउं ताम ॥ १८६ बोलइ बाहुबलि बलवंत, लोहखंडि तर्ज गरवीउ हंत । चक्रसरीसउ चूनउ करउं, सयलहं गोत्रह कुल संहरउं।। तु भरहेसर चिंतइ चींति, मइं पुण छोपीय भाईय भीति। जाणउं चक्र न गोत्री हणइ, माम महारी हिव कुण गिणइ।। १८८ तु बोलइ बाहूबलि राय(उ), भाईय मनि म म धरसि विसाउ। तइं जीत उं मइं हारि उं भाइ, अम्ह शरण रिसहेसर पाय ॥ १८९

ठवणि १४. तड तिहिं ए चिंतइ राड, चिंडिड संवेगिइं बाहुबले।
दूहविड ए मइं वड्ड भाय, अविमांसिइं अविवेकवंति ॥ १९०
धिग धिग ए एय संसार, धिग धिग राणिम राजरिद्धि।
एवड्ड ए जीवसंहार, कीधड कुण विरोधवसि॥ १९१
कीजइ ए किह कुण काजि, जड पुण बंधव आवरइं ए।
काज न ए ईणइं राजि, घरि पुरि नयरि न मंदिरिहि॥ १९२

सिरिवरि ए लोच करेइ, कासिंग रहीउ बाहुबले।	
अंसू उए अंखि भरेड, तस पय पणमए भरह भड़ो ॥	१९३
बांधव ए कांइ न बोल, ए अविमांसिउं मई कीउं ए।	, , , ,
मेल्हिम ए भाई निटोल, ईणि भवि हुं हिव एकलु ए॥	१९४
कीजई ए आजु पसाउ, छंडि न छंडि न छयल छलो ।	, 10
हीयडइ ए म धरि विसाउ, भाई य अम्हे विरांसीया ए।।	१९५
मानई ए निव मुनिराउ, मौन न मेल्हइ मन्नवीय।	
मुक्कई ए नहु नीय माण, वरस दिवस निरसण रहीय।।	१९६
बंभीउ ए सुंदरि बेउ, आवीय बंधव बूझवइं ए।	
ऊतरि ए माणगयंद, तु केवलिसिरि अणसरइ ए॥	२९७
ऊपनूं ए केवछ नाण, तु विहरइ रिसहेस सिउं।	
आवीउ ए भरह नरिंद, सिउं परगहि अवझापुरी ए ॥	२९८
हरिषीया ए हीइ सुरिंद, आपण पइं उच्छव करइं ए।	
वाजई ए ताल कंसाल, पडह पखाउज गमगमइं ए॥	२९९
आवई ए आयुधसाल, चक्क रयण तड रंगभरे।	
संख न ए जस केकाण, गयघड रहवर राणिमहं ॥	२००
दस दिसि ए वरतइं आण, भड भरहेसर गहगहइ ए।	
रायह ए गच्छ सिणगार, वयरसेण सूरि पाटधरो ॥	२०१
गुणगणहं ए तणु भंडार, सालिभद्र सूरि जाणीइ ए ।	
कीधउं ए तीणि चरितु, भरहनरेसर राउ छंदि ए।।	२०२
जो पढइ ए वसह वदीत, सो नरो नितु नव निहि लहइ ए	
संवत ए बार^{१२} कएता लि ^{४१} फागुण पंचमिइं एउ कीउ ए ।।	२०३

॥ इति भरतेश्वर - बाह्नबिल रास श्रीसालिभद्रसूरिकृतसमाप्तः ॥ ॥ ऋोक संस्था ३४० ॥ छ ॥

विमलमतिगणिविलोकनाय ॥ कल्याणं भूयाश्चिरं नन्दतु याषश्चनद्र-रधी ॥

शालिभद्रसूरिकृत

बुद्धि रास

पणमवि देवि अंबाई, पंचाइण गामिणी। समरवि देवि सीधाई, जिण सासण सामिणि ॥ १ पणमित गणहरु गोयम स्वामि, दुरित पणासइ जेहनइ नामिइं। सुहगुरु वयणे संग्रह कीजई, भोलां लोक सीषामण दीजइ॥ २ केई बोल जि लोकप्रसिद्धा, गुरुउवएसिइं केई लीद्धा। ते उपदेश सुणड सवि रूडा, कुणहइ आल म देयो कूडा ॥ ₹ जाणीउ धरम् म जीव विणास, अणजाणिइ घरि म करिसि वासु । चोरीकारु चडइ अणलीधी, वस्तु सु किमइ म लेसि अदीधी।। परि घरि गोठि किमइ म जाइसि, कूड उं आलु तुं मुहियां पामिसि। जे घरि हुइ एकली नारि, किमइं म जाइसि तेह घरबारि ॥ 4 घरपच्छोकडि राषे छीडी, वरजे नारि जि बाहिरि हीडी। परस्नी बहिनि भणीनइ माने, परस्नी वयण म धरजे काने ॥ Ę मइ एकलड मारगि जाए, अणजाणिड फल किमई म घाए। जिमतां माणस द्रेठी म देजे, अकहिं परि घरि किंपि म छेजे ॥ वडां ऊतर किमइं न दीजइं, सीष देयंतां रोस न कीजइं। ओछइ वासि म वसिजे कीमइं, धरमहीणु भव जासिइ ईमइ॥ ८ छोरू वीटी ज हुइ नारि, तं सीषामण देजे सारी। अति अंधारइ नइ आगासइं, डाहुड कोइ न जिमवा बइसई ॥ ९ सीषि म पिसुनपणु अनु चाडी, वचनि म दूमिसि तू निय माडी। मरम पीयार प्रगट न कीजइ, अधिक लेइ नवि ऊछं दीजइ ॥१० विसहरु जातु पाय म चांपे, आविइ मरणि म हीयडइ कांपे। महणा पाषइं व्याजि म देजे, अणपूछिइ घरि नीर म पीजे ॥ ११ कहिसि म कुणहनीय घरि गूझो, मोटां सिउं म मांडिसि झूजो। अणविमास्यां म करिसि काज, तं न करेवं जिणि हुई लाज।। १२ जणि वारितं गामि म जाए, तं बोले जं पुण निरवाहे। षातु कांइ हींडि म मागे, पाछिम राति बहिछ जागे ॥ १३

	हियहइ समिर न कुछ आचारी, गणि न असार एह संसारी	
	पांचे आंगुिल जं धन दीजई, परभिव तेहतणुं फलु लीजई।।	.
ठवणि	े १. मरम म बो लिसि वीरु, कुणहइ केरउ कुतिगिहिं।	
	जलनिहि जिम गंभीरु, पुह्विइ पुरुप प्रसंसीइ ए॥	૧
	उछिनु धनु लेउ, सागि भोगि जे वीद्रवइ ए।	17
	पवहणि ति पगु देउ, जाणे सो साइरि पडइ ए।।	१६
	एक कन्हइ लिइ न्याजि, बीजाह्रइं न्याजि दीयए।	, ,
	सो नर जीविय काजि, विस विह वन संचरइ ए ।।	१७
	ऊडइ जिल म न पइसि, अधिक म बोलिसि सुयणस्युं।	•
	मुनइ घरि म न पइसि, चउहटइ म विढिसि नारिस्युं।।	१८
	बोल विच्यारिय बोलि, अविचारीय घांघल पडइ ए।	
	मृ्रष मरइ निटोल, जे धण जौवण वाउला ए ॥	१९
	बल ऊपहरऊ कोपु, बल ऊपहरी वेढि पुण ।	
	म करिसि थापणि लोप, कूडओ किमइ म विवहरसे।।	२०
	म करिस जूयारी मित्र, म करिसि किल धन सांपडए।	
	घणुं लडावि म पुत्र, कल्ह म करिजे सुयण सिंउं तु ॥	२१
	धनु ऊपजतउं देषि, वाप तणी निंदा म करे।	
	म गमु जन्मु अलेषि, धरम विहूणा धामीयहं ॥	२२
	कंठ विहूणुं गानु, गुरु विहूणउ पाढ पुण ।	
	गरथ विहूणुं अभिमान, ए त्रिहूई असुहामणा ए ॥ *	२३
ठवणि	२. हासउं म करिसि कंठइं कूया, गरिथ मूढ म खेलि जूया,	
	म भरिसि कूडी साषि किहइं ॥	२४
	गांठि सारि विणज चलावे, तं आरंभी जं निरवाहे ।	
	निय नारी संतोष करे।।	२५
	मोटइ सरिसुं वयर न कीजइं, वडां माणस वितउ न दीजइ।	
	बइसि म गोठि फलहणीया ।।	२६

१ बीजी प्रतिमां 'विसवेलि विष संहरइ ए' आवो पाठ छे। २ पाठान्तर – 'जु हियइ सुहाए'। ३ पा॰ 'चउवटए'।

्गुरुयां उपरि रीस न कीजइ, सीष पूछंतां कुसीष म देजे। विणड करंतां दोस नवि॥ २७ म करिसि संगति वेशासरसी, धण कण कूड करी साहरसी। मित्री नीचिइ।सं म करे।। 26 थोडामाहि थोडेरुं देजे, वेला लाधी कृपण म होजे। गरव म करीजे गरथतणुं ॥ 39 व्याधि शत्रु ऊठतां वारच, पाय ऊपरि कोइ म पचारु। सत् म छंडिसि दुहि पडीउ।। ३० अजाण्यारहि पदू म थाए, साजुण पीड्यां वाहर धाए। मंत्र म पूछिसि स्त्री कन्हए।। ३१ अजाणि कुलि म करि वीवाहो, पाछइ होसिइं हीयडइ दाहो। कन्या गरथिइ म वीकणसे ॥ ३२ **†देव म भेटिसि ठालइ हाथि, अण**डल षीतां म जाइसि साथिइं। गृझ म कहिजे महिलीयह ॥ ३३ †परहुणइं आव्यइ आद्र कीजइं, जुनुं ढोर न कापड लीजइं। हतइ हाथ न खांचीइए।। †गाढइं घाइं ढोर म मारु, मातइ कलिह म पइसि निवार । पर घरि मा जिमसि जा सकूया।। ३५ भगति म चूकीसि बापह मायी, जूठउ चपल म छंडिसि भाई। गुरव म करि गुरु सहासिणी य ॥ ३६ नीपनइं धानि म जाइसि भूषिउ, गांठि गरथि म जीविसि खूषउं। मोटां पातक परहरड ए।। ₹ o गिउ देशांतरि सूयसि म रातिइ, तिम न करेवुं जिम टल पांतिइं। तृष्णा ताणिउ म न वहसे ॥ 36 धणि फीटइं विवसाइं लागे, आंचल उडी म साजण मागे। कुणहइ कोइ न ऊधरीउ॥ 38

१ पाठान्तर-'गरुआसिउं अभिमान न कीजउ'।

[†] आ कडीओ बीजी बीजी प्रतोमां आगळ पाछळ लखेली मळे छे, तेम ज वधती ओछी पण मळे छे।

[†जीवतणुं जीवि राषीजइ, सविहुं नइ उपगार करीजइ।	
सार संसारह एतळ ।। 🕽	•> -
माणिस करिवा सिव व्यवहार, पापी घरि म न लेजे आहार	ı
म करिस पुत्र पढीगणं ए ॥	ಲಂ
जइ करिवुं तो आगइ म मागिं, गांधीसिउं न करेवउं भागि	1
मरतां अर्थु म लेसि पण ॥	ยอ
उसड म करिसि रोग अजाणिइं, कुणहं गुरथु म लेसि पराणि	
सिरज्यां पाषइ अरथ नवि ।।	४३
धरमि पडीगे दुत्थित श्रवण, अनि आवतुं जाणे मरण।	·
माणस धरम करावीइ ए ॥	88
इसि परि वइदह पाप न लागइं, अनइ जसवाउ भलेरउ जा	गड ।
राषे लोभिइं अंतरीउ ॥	४५
*	
ठविण ३. हिव श्रावकना नंदनह, बोलेसु केई बोल।	
अवघड मारगि हींडंतां ए, विणसई धरम नीटोल ॥	४६
तिण पुरि निवसे जिण हवए, देवालंड पोसाल ।	
भूष्यां त्रिस्यां गोरूयहं, छोरू करि न संभाछ ॥	४७
तिण्हिवार जिण पूज क रे, सामायक ['] वे वार ।	
माय बाप गुरु भक्ति करे, जाणी धरम विचारु ॥	85
करमबंध हुइ जिण वयणि, ते तउं वोलि म बोलि ।	
अधिके ऊणे मापुले, कुडवं किमइ म तोलि ॥	88
अधिक म लेसि मापुलइं, उच्छं किमइ म देसि ।	
एकह जीवह कारणिहि, केतां पाप करेसि ॥	५०
जिणवर पूठिइं म न वससे, म राखे सिवनी द्रेठि ।	
राडिल आगलि म न वससे, बहूअ पाडेसिइं वेठि॥	५१

[†] केटलीक प्रतोमां आ कडी नश्री मळती, तेथी सेपक लागे छे।

९ बीजी प्रतमां 'प<mark>हिकमणुं' शब्द छे</mark>।

२ प्रसंतरमां 'काटलेऊ' शब्द छे। ३ प्रसंतरमां 'हेठलि' शब्द छे।

राषे घरि वि ^र बारणां ए, ऊधत राषे नारि ।	
ईंधणि कातणि जलवहणि, होइ सछंदाचारि ॥	५२
षटकसाल पांचइ तणीय, जयणा भली करावि ।	
आठमि चउदसि पूनीमिहि, घोयणि गारि वरावि ॥	५३
[† अणगल जल म न वावरू ए, जोउ तेहनउ व्याप।	
आहेडी मांछीं तणूं ए, एक चलुं ते पाप ॥	५४
होह मीण लष घाहडी य, गली य चरम विचारि ।	
एह सविनूं विवहरण, निश्चउ करीय निवारि ॥	५५
सुदमुहि जेतुं चांपीद ए, जीव अनंता जाणि।	
कंद मूल सवि परहरु ए, धरम म न करइ हाणि ॥	५६
रयणी भोजन म न करिसि, बहूय जीव सिंहार ।	
सो नर निश्चइ नरयफल, होसिइ पाप प्रमाणि ॥]	40
जांत्र जोत्र ऊषल मुशल, आपि म हल हथीयार ।	
सइं हथि आगि न आपीइ ए, नाच गीत घरवारि ॥	46
पाटा पेढी म न करसे, करसण नइ अधिकारि ।	
न्याइं रीतिइं विवहरु ए, श्रावक एह आचार ॥	५९
वाच म घालिसि कुपुरसह, फूटइ मुहि महसेसि ।	
बहुरि म आस पिराईह, बहु ऊधारि म देसि ॥	६०
वइद विलासणि दूइडीय, सुइआणीसु संगु ।	
राषे बहिनर वेटडी य, जिम हुइ शील न भंगु॥	६१
गुरु उपदेसिइ अति घणा ए, कहूं तु छहुं न पार ।	
एह बोल हीयडइ धरीउ, सफल करे संसार ॥	६२
सालिभद्रगुरु संकुलीय, सिविहूं गुर उपदेसि ।	
पढइ गुणइ जे संभलहिं, ताहइ विघ्न टलेसिं ।।	६३
॥ इति बुद्धिरास समाप्तमिति ॥	

१ पा॰ 'बहु'। २ पा॰ 'तीह सवि टलइ किलेस तु'।

[†] आ को छक वचे आपेली ४ कडीओ सौथी जूनी प्रतिमां नथी मळती। बीजी बीजी प्रतोमां आ बधी आडी अवळी अने वधती ओछी संख्यामां मळे छे। एमांना वर्णन उपरची ज जणाय छे के ए पाछळनो थएलो उमेरो छे. मूळ कर्तानी कहेली नश्री।



Frinted by Ramchandra Yesu Shedge, at the Nirnaya Sagar Press, 26–28, Kolbhat Street, Bombay.

Published by Dr. Manilal Patel, Director, Bharatiya Vidya Bhavan, Andheri, Bombay.